

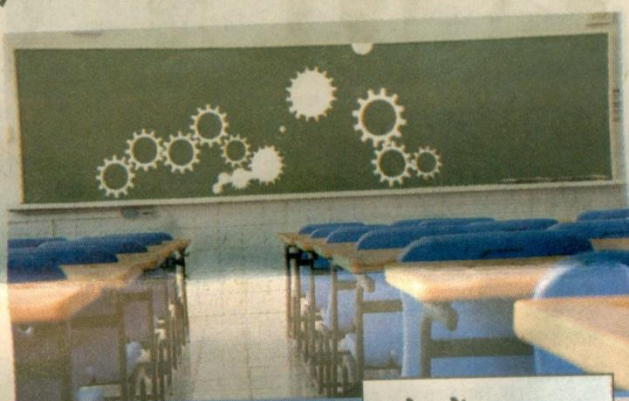
इंजीनियर्स डे पर विशेष...

इंजीनियरिंग से विद्यार्थियों का मोहभंग, कॉलेजों में सीटें खाली

प्रदेश में हर साल तैयार होते हैं बीस से 25 हजार इंजीनियर्स

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

उदयपुर. पहले इंजीनियरिंग करना किसी सपने को पूरा करने से कम नहीं होता था। आम आदमी भी अपने बच्चों को इंजीनियर बनते देखना चाहता था, लेकिन अब यह सपना डरावना हो गया है। इंजीनियरिंग में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या साल दर साल कम होती जा रही है। इसका मुख्य कारण इंजीनियरिंग के बाद अपेक्षा के अनुरूप रोजगार नहीं मिल पाना है। सरकारी कॉलेज में प्रवेश के लिए विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा रहती थी, लेकिन इस साल इंजीनियरिंग में प्रवेश को लेकर प्रतिस्पर्धा तो दूर उनकी सीटें भी नहीं भर पाई। सत्र 2017-18 में सरकारी कॉलेज में सिर्फ 58 प्रतिशत अर्थात् 5 हजार 860 में से 2 हजार 483 सीटों पर ही प्रवेश हुए।



यह है संस्थानों की स्थिति

वर्ष	बंद हुए संस्थान
2012-13	14
2013-14	4
2014-15	5
2015-16	3
2016-17	12
2017-18	10

48 संस्थान बंद कर दिए गए पिछले पांच वर्षों में

प्लेसमेंट हुए कम

एआईसीटीई वेबसाइट के अनुसार प्रदेश में 417 इंजीनियरिंग संस्थान थे। गत सत्र इसमें से 7 हजार 660 छात्रों व 38 हजार 889 छात्रों ने प्रवेश लिया। सरकारी व निजी महाविद्यालयों में से 17 हजार 949 विद्यार्थियों का ही प्लेसमेंट हो पाया। आईसीटीई की वेबसाइट के अनुसार पिछले पांच वर्षों में 48 संस्थान बंद कर दिए गए।

प्राइवेट कॉलेजों में एडमिशन नहीं

राजस्थान इंजीनियरिंग प्रवेश प्रक्रिया के तहत प्राइवेट कॉलेजों में सिर्फ 32 प्रतिशत सीटों पर ही प्रवेश हुए। प्रथम से कॉलेजों के 43 हजार 446 सीटों सीटों के मुकाबले 13 हजार 864 विद्यार्थियों ने ही प्रवेश लिया।

प्लेसमेंट बड़ी समस्या

महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के संघटक सीटीआई के डीन डॉ. एसएस राठौड़ ने बताया कि प्राइवेट कॉलेज में प्लेसमेंट को लेकर बड़ी समस्या है। सरकारी कॉलेजों में यह समस्या कम रहती है। प्रदेश में हर साल बीस से पच्चीस हजार इंजीनियर्स तैयार होते हैं।

मांग से ज्यादा इंजीनियर बनाने वाले

डॉ. राठौड़ ने कहा कि इंजीनियर्स की मांग से ज्यादा यहां इंजीनियरिंग संस्थान खुल चुके हैं। इसके चलते भी रोजगार मिलने में समस्या आती है। बीस वर्ष पहले प्रदेश में गिनती के इंजीनियरिंग कॉलेज थे।